

श्री पार्श्वनाथ जिन पूजन

(डॉ. अखिल बंसल कृत)

(दोहा)

पार्श्वनाथ के पद पंकज में, वंदन मेरा बारम्बार।
तुम हो सिद्धशिला अधिनायक, ज्ञान तुम्हारा अपरंपार।।
मम राह कंटकाकीर्ण हुई, कैसे भव सागर पार करूं।
प्रभुवर मैं तो शरणागत हूँ, निज वैभव कैसे प्राप्त करूं।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् ।

मैं तो अनादि से पीडित हूँ, उपचार मुझे कुछ मिल जाए।
मेरी आकुल-व्याकुलता भी, पल भर में नाथ विनश जाए।।
अन्तस्तल निर्मल करने को, मैं लाया निर्मल जलधारा।
शुचि सरल भाव मेरे नित हों, जग से मिल जाए छुटकारा।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

बहुमूल्य समय मैंने खोया, बाहर की निधियां पाने को।
पर सुख किंचित भी पा न सका, भव सागर से तिर जाने को।।
विषयों की ज्वाला धधक रही, मैं उसमें जलता आया हूँ।
संसार ताप के शमन हेतु, चंदन अर्पण ढिंग लाया हूँ।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

इन्द्रादिक वैभव चाह नहीं, ना रंचमात्र है अभिलाषा।
चैतन्य शक्ति निज में प्रगटे, मन में यह जाग उठी आशा।।
निज तेज तपस्या के बल पर, मैंने अक्षय निधि को है जाना।
यह अक्षत पुंज समर्पित हैं, अक्षय सुख मुझको है पाना।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

शतदल सुषमा से सरवर, नित ही शोभा को पाता है।
पर रस के फेर फंसा मधुकर, अपने ही प्राण गंवाता है॥
तुम तो हो कामजयी जिनवर, हम शरण आपकी आए हैं।
मिट जाए काम व्यथा मेरी, बहु सुमन साथ में लाए हैं॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

यह क्षुधा रोग है दुखदायी, भारी पीडा जो पहुंचाता।
ना ना व्यंजन के भोग किये, पर तृप्त नहीं मैं हो पाता॥
इनके आस्वादन से प्रभुवर, संतुष्ट नहीं हो पाया हूँ।
अब क्षुधा रोग का दुःख मिटे, नैवेद्य चढाने आया हूँ॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मम मोह अंध में फंसाकर के, जीवन को नरक बना डाला।
सम्यक रत्नत्रय पाने को, सद् मार्ग न अब तक मिल पाया॥
दीपक का ताल सजा जिनवर, चरणों में आज चढाऊंगा।
अज्ञान तिमिर छंट जाए प्रभु, दिन रात भावना भाऊंगा॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

करमों का बंधन दुखदाई, कोई न इससे बचपाया।
पर तुमने करमों को जीता, मैं रहा अभी रीता-रीता॥
ले धूप सुगंधित द्रव्यमयी, अर्पित करने ढिंङ लाया हूँ।
ऐसा संयोग मिला मुझको, हे नाथ ! शरण में आया हूँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

मोक्ष महाफल की दुर्लभता, सबकी जानी-मानी है।
फिर भी मैंने हिम्मत करके, उसको पाने की ठानी है॥
उत्कृष्ट फलों के उपवन से, चुन-चुन कर सब ले आया हूँ।
शिव फल पाने की आस जगी, अब नहीं कहीं भरमाया हूँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जन्म मरण संताप मिटाने, भव बाधा परिहार करूं।
जीवन विकास के प्रिय पथ को, पाने को समता भाव धरूं।
इन अष्ट कर्म आवरणों को, मैं आज हटाने आया हूँ।
सिद्धों की श्रेणी पाने को, वसु द्रव्य चढाने लाया हूँ।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पंचकल्याणक अर्घ्य

दूज कृष्ण वैशाख की आई,काशी ने तब ली अंगड़ाई।
वामा देवी के उर आए, इन्द्र- नरेन्द्र सभी सिर नाये।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय वैशाखकृष्णद्वितीयायां गर्भकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पौष माह एकादश काली,अश्वसेन घर खुशियां छाई।
जन्मोत्सव की खुशी मनाएं,हो अभिषेक देख गुण गाएँ।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पौषकृष्णैकादश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अखिल सुखों से किया किनारा, राज-पाट भी छोड़ा सारा।
पौष वदी एकादश प्यारी, जाकर वन में दीक्षा धारी।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पौषकृष्णैकादश्यां तपकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जब कलि चैत्र चतुर्थी आई,केवलज्ञान की खुशियां छाई।
समता भाव बना सुखकारी,समवशरण देखा मनहारी।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय चैत्रकृष्णचतुर्थ्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रावण शुक्ल सप्तमी आया,पार्श्व प्रभु निर्वाण है पाया।
शैल शिखर सम्मेद है नामी,मोक्ष पथिक हों सब अनुगामी।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय श्रावणशुक्लसप्तम्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

(दोहा)

तीर्थकर श्री पार्श्वनाथ को ,मन वचन से ध्याय।

शीघ्र सिद्ध पद प्राप्त हो,जय-जय-जय जिनराय।।

अश्वसेन कुल दीपक प्रभुवर,वामा देवी के नंदन।

पौष कृष्ण एकादशी जन्मे,सब मिल करते हैं वंदन।।१।।

नीलमणि सम रूप आपका,निरखत सबके मन भाया।

रोचक बचपन की घटनाएं, सुन-सुन कर मन हर्षाया।।२।।

केवल श्रवण मात्र से सबको, मिलती हैं जो शिक्षाएं।
 धरम धुरंधर करुणासागर, कैसे सत्पथ हम पाएं॥३॥
 एक दिवस मित्रों के संग वे, गज पर बैठे निकल पड़े।
 कानन में था एक तपस्वी, पंचाग्नि तप हेतु खड़े॥४॥
 नाग-नागनी जलते देखे, मन विचलित हो द्रवित हुए।
 दौड़े जाकर उन्हें बचाया, किंचित भी न भ्रमित हुए॥५॥
 मरकर नाग नागनी दोनों, देवलोक को गये सिधार।
 पद्मावती धरणेन्द्र कहाये, भूल सके न वे उपकार॥६॥
 अल्प आयु में दीक्षा व्रत ले, आप तपस्वी बने महान।
 आत्मध्यान में रूढ़ रहे हो, जिसको जाने सकल जहान॥७॥
 ध्यान मग्न पारस प्रभु ऊपर, क्रूर कमठ उपसर्ग किया।
 धरणेन्द्र पद्मावती ने आकर, उन विघ्नों का हरण किया॥८॥
 संयम की नौका पर चढकर, साम्य भाव को अपनाया।
 सत्य सिंधु में गोते खाकर, आप कैवल्य ज्ञान पाया॥९॥
 सकल सृष्टि की दृष्टि बदली, प्रभु की चिंतन धारा से।
 मुक्ति मार्ग के पथिक बने सब, भव बंधन की कारा से॥१०॥
 शैल शिखर सम्मोद गिरी से, मुक्ति पद को पाया है।
 पार्श्वनाथ प्रभु के चरणों में, सबने शीश झुकाया है॥११॥
 रूप आपका जब से निरखा, निज स्वरूप का भान हुआ।
 तुम सम हम भी बनें प्रभु जी, दृढ निश्चय श्रद्धान हुआ॥१२॥
 मैने भक्ति विभोर आज यह, मन से कीनी है पूजन।
 'अखिल' जगत सम्यक् फल पावे, कट जाएं भव के बंधन॥१३॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय गर्भजन्मतपोज्ञाननिर्वाणपंचकल्याणकप्राप्ताय
 जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(दोहा)

पार्श्वनाथ के पद पंकज को, पूजूं मन-वच-काय।
 भाव सहित वंदन करूँ, शीघ्र मुक्ति मिल जाय॥

(इति पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)